शिक्षा में गुणवत्ता के निहितार्थ

विश्वंभर

राजकीय शिक्षा व्यवस्था के बारे में असंतोष एवं अनेक चिन्ताएं जाहिर की जाती रही हैं। यह सुखद है कि राजकीय शिक्षा व्यवस्था में गुणवत्ता के सवाल को विचारणीय माना जाने लगा है। राजस्थान में राजकीय शि ाक्षा में गुणवत्ता सुधार के लिए मुख्यमंत्री महोदया ने भी एक पहल की है। हाल ही में उन्होंने विधायकों एवं मंत्रियों को एक पत्र जारी कर राजकीय शालाओं की गुणवत्ता सुधार के लिए शालाओं की 'परफॉरमेन्स ऑडिट' करने के निर्देश दिए हैं। यह आश ाा की जा सकती है कि यदि शिक्षा में गुणवत्ता का सवाल मंत्रियों और विधायकों की नजर में आएगा तो निश्चित रूप से इसे अर्जित कर पाने की दिश ाा में आगे भी काम होगा। इस संदर्भ में मुख्यमंत्री महोदया ने विधायकों एवं मंत्रियों को अपने-अपने क्षेत्र की स्कूलों की परफॉरमेन्स ऑडिट के लिए एक प्रपत्र जारी किया है जिसमें निम्नलिखित मुद्दों के तहत शालाओं को देखने के निर्देश हैं-

- विद्यार्थी नामांकन एवं उपस्थिति (छात्र-छात्रा)
- स्वीकृत स्टाफ, कार्यरत एवं रिक्त पद आदि
- भौतिक आधारभूत सुविधाएं- कक्षा कक्ष, पीने के पानी की सुविधा, शौचालय (छात्र एवं छात्राओं के अलग-अलग), चारदीवारी, खेल मैदान, प्रयोगशाला, कम्प्यूटर, रेन वाटर हारवेस्टिंग स्ट्रेक्चर
- वृक्षारोपण-लगाए गए पौधे एवं जीवित पौधे
- परीक्षा परिणाम - 5 वीं, 8 वीं, 10 वीं, 12 वीं
- मिड डे मील योजना, टीएसपी एरिया में निशुल्क साइकल वितरण
- विद्यालय विकास प्रबंधन समिति के कार्य पर टिप्पणी
- विद्यालय एक नजर में
- सिफारिश एवं सुझाव

निश्चित तौर पर ये सभी मुद्दे शिक्षा की गुणवत्ता को उन्नत करने से जुड़े हुए हैं। ये सभी मुद्दे किसी भी राष्ट्र/राज्य की समुन्नत शिक्षा व्यवस्था के लिए बुनियादी तौर पर आवश्यक हैं। यदि शालाओं में ये सभी मापदण्ड सुनिश्चित होंगे तो शिक्षा की गुणवत्ता अर्जित करने में मदद मिलेगी।

किसी भी विद्यालय में शिक्षा के उद्देश यों को हासिल करने के लिए बच्चों का नामांकन एवं उपस्थिति अनिवार्य है। यह पहली शर्त है। यदि शालाओं में बच्चे ही नहीं आएंगे तो बेहतर शिक्षा के चाहे कितने ही दावे किए जाएं वे किसी भी परिणाम तक नहीं पहुंच पाएंगे। बच्चों के बेहतर शिक्षण की संभावनाओं के लिए उचित अनुपात में शिक्षकों का होना भी परमावश्यक है। यदि सभी बच्चे आएं और शि ाक्षक उचित अनुपात में नहीं हों तो बेहतर शिक्षण की कल्पना नहीं की जा सकती। अतः बेहतर शिक्षण के लिए शिक्षकों का उचित अनुपात में होना भी केन्द्रीय महत्त्व का विषय है। इसी प्रकार आधारभूत सुविधाएं भी अनिवार्य हैं। आधारभूत सुविधाओं के होने से शिक्षण को सुनियोजित रूप में आगे बढ़ाया जा सकता है। शाला वातावरण को बनाने में आधारभूत सुविधाएं एवं वृक्षारोपण आदि भी मददगार हो सकते हैं। बच्चों को स्कूल एक सुन्दर और आकर्षक स्थान लगेगा तो वहां वे सहर्ष आना पसंद करें। परीक्षा परिणाम शिक्षा में हो रहे काम का मूल्यांकन हो सकता है। अतः यह कहा जा सकता है कि उपरोक्त सभी मुद्दे शि ाक्षा की गुणवत्ता से किसी न किसी रूप में जुड़े हुए हैं।

राजस्थान सरकार ने गुणवत्ता सुधार की दूसरी मुहिम में मूल्यांकन को शामिल किया है। राजकीय विद्यालयों के गिरते परीक्षा परिणाम हाल ही में चिन्ता और चर्चा का विषय बने हुए हैं। अखबारों में ऐसे स्कूलों की सूची पेश की जा रही है जिनका परीक्षा परिणाम 25 प्रतिशत से भी कम रहा है। ऐसे में मूल्यांकन की चर्चा भी प्रसांगिक हो जाती है। मूल्यांकन के संदर्भ में सरकार का कहना है कि राजस्थान में 5 वीं, 8 वीं, 10 वीं एवं 12 वीं कक्षाओं में सेमेस्टर प्रणाली लागू की जाएगी। कहा जा रहा है कि सेमेस्टर प्रणाली में बच्चों की परीक्षाएं वर्ष में एक बार की जगह दो बार होंगी और इससे बस्ते का बोझ कम होगा। मूल्यांकन व्यवस्था में सुधार भी शि ाक्षा में गुणवत्ता का अहम घटक है। दोनों ही मुद्दों पर इस पहल से सरकार का शिक्षा के प्रति सरोकार जाहिर होता है।

लेकिन इस पहल में यह ध्यान दिए जाने की भी आवश्यकता है कि ये आवश्यक मुद्दे हैं लेकिन शिक्षा की गुणवत्ता के लिए अपरिहार्य मुद्दे नहीं हैं। अतः शिक्षा में गुणवत्ता सुधार के लिए इस विमर्श को और व्यापक करना होगा एवं आगे बढ़ाना होगा। तभी जाकर हम सही मायने में शिक्षा की गुणवत्ता को सुनिश्चित कर पाएंगे। इन सभी मापदण्डों से आगे बढ़कर यह भी देखना होगा कि वास्तव में शिक्षा की गुणवत्ता के मायने क्या हैं ? गुणवत्ता की सही परिभाषा क्या है ? वे और कौनसे घटक हैं जो शिक्षा की गुणवत्ता को तय करते हैं ?

वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में शिक्षा की सामाजिक भूमिका, शिक्षा के माध्यम से अनुकूलन, शिक्षा का बाजारोन्मुख नजरिया, सूचनाओं को ज्ञान का पर्याय मान लेना, शिक्षा के माध्यम से यथास्थितिवाद का सुदृढ़ीकरण आदि ऐसी अनेकानेक समस्याएं हैं कि शिक्षा में गुणवत्ता का सवाल अहम मुद्दा सभी शिक्षा दार्शनिकों एवं शिक्षा कार्मियों के सम्मुख खड़ा होता है। सवाल ये भी है कि क्या शिक्षा के उद्देश्य अपने आप में शिक्षा की गुणवत्ता को इंगित नहीं करते ? क्यों कर किसी स्थापित व्यवस्था में ऐसे नए शब्दों या विचारों की आवश्यकता पड़ती है ? मूलतः मौजूदा स्थितियों से असंतोष या किसी व्यवस्था में नए विचारों एवं व्यवहारों के लिए गुंजाइश निकालना एक कारण हो सकता है। शिक्षा में गुणवत्ता का सवाल मौजूदा शिक्षा व्यवस्था में ऐसे विचारों एवं व्यवहारों के लिए नए स्थान के सृजन से जुड़ा है जो शिक्षा के नाम पर चल रहे मौजूदा क्रियाकलापों से भिन्न हों और जो सही मायने में जीवन को अर्थवत्ता देता हो। जीवन की अर्थवत्ता का विचार अपने आप में सरल और सुलझा हुआ विचार नहीं है। जैसा कि आमतौर पर दिखाई देता है कि ज्यादातर बच्चों, बच्चों के माता-पिता एवं शिक्षा व्यवस्था के संचालकों तक को शिक्षा की अर्थवत्ता 'अच्छी नौकरी' मिलने एवं संसाधन संपन्न होने में लगती है। वहीं सामाजिक सरोकार रखने वाले व्यक्ति की दृष्टि में जीवन की अर्थवत्ता सामाजिक हितों के मामले में सक्रियता और स्वान्तः सुखाय से बाहर निकलकर समाज के हित में काम करना होगी।

भारतीय शिक्षा परिदृश्य में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा पर गंभीर विमर्श और लेखन, खासकर हिन्दी में, न के बराबर है। शिक्षा में इस शब्द का व्यापक चलन 60 के दशक में हुआ और भारत में 90 के दशक में। शिक्षा में इस शब्द के चलन के पीछे बाजार की ताकतों का योगदान रहा है। हालांकि यह कहना उचित नहीं होगा कि बेहतर शिक्षा के प्रयास 60 के दशक की ही देन हैं। शिक्षा की सुदीर्घ परंपरा ने हमें इन सभी मुद्दों पर सोचने के लिए पर्याप्त सामग्री दी है। यदि भारतीय संदर्भों में देखें तो रवीन्द्रनाथ टैगोर, महात्मा गांधी, जे. कृष्णमूर्ति, गिजुभाई आदि ने शिक्षा के संदर्भ में अभिनव विचार दिए हैं।

गुणवत्ता का सवाल इकहरा नहीं है। यह विचार बहुपरती है। इसकी परतें अनेकानेक दार्शनिक, समाजशास्त्रीय, शिक्षाशास्त्रीय एवं मनोवैज्ञानिक धारणाओं से जुड़ी हुई हैं-जो बच्चों के सीखने और शिक्षा के उद्देश्यों के साथ ही बच्चों के प्रति धारणा, पाठ्यचर्या, विषयवस्तु, शिक्षण विधियों, शिक्षक-बालक संबंधों, बाल मनोविज्ञान, सीखने के मनोविज्ञान, मूल्यांकन के तरीकों एवं शिक्षण प्रशिक्षण आदि से जुड़ी हैं। यदि इन मुद्दों पर गंभीरता से विचार नहीं किया जाएगा तो शायद शिक्षा में गुणवत्ता की समस्या पर विमर्श प्रसांगिक नहीं होगा। इन मुद्दों पर भी आमजन की समझ एवं शिक्षाशास्त्रीय समझ के बीच भी एक गहरी खाई नजर आती है। इसीलिए इस विमर्श को सावधानी से करने की जरूरत जान पड़ती है। हम यहां देखने की कोशिश करेंगे कि गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए वे कौनसे घटक हैं जो कि आवश्यक और अपरिहार्य हैं ?

दर्शनशास्त्र में किसी भी चीज या घटना के होने के लिए दो प्रकार की शर्तों की बात की जाती है। पहली है अपरिहार्य शर्तें (नेसेसरी कंडीशन्स) एवं दूसरी है उपयुक्त शर्तें (सफिसिएंट कन्डीशन्स)। किसी भी घटना के होने के लिए ऐसी शर्तें जिनके बिना उस घटना का होना ही संभव नहीं हो जैसे कि एक पौधे के होने के लिए बीज, मिट्टी, प्रकाश, पानी आदि अपरिहार्य शर्तें हैं। इनके बिना पौधे के होने की कल्पना नहीं की जा सकती। यदि इसे शिक्षा के संदर्भ में देखें तो बच्चों का होना, शिक्षक का होना या वे सभी आधारभूत सुविधाएं जो कि एक शाला के होने के लिए अपरिहार्य हैं जैसे उचित संख्या में कक्षा कक्ष, शिक्षण सामग्री, खेल मैदान, खेल सामग्री, चारदीवारी, शौचालय आदि। इसके अलावा उपयुक्त शर्तों में वे सभी चीजें आती हैं जिनके होने से वह चीज या घटना अनिवार्य रूप से हो ही जाएगी। पौधे के संदर्भ में बीज, मिट्टी, प्रकाश और पानी के होने मात्र से पौधा नहीं हो जाता। उसके लिए कोई बीज को रोपने वाला चाहिए एवं उपयुक्त वातावरण चाहिए। यदि उपयुक्त शर्तों को शिक्षा के संदर्भ में देखें तो शिक्षकों का संकल्प, प्रेरणा, उनकी समझ, प्रतिबद्धता एवं कार्य के प्रति ईमानदारी वे मापदण्ड होंगे जो शिक्षा की गुणवत्ता को सही मायने में अर्जित करने में मदद करेंगे। इन सभी के होने से शिक्षक बेहतर शिक्षा के लिए प्रयास करेगा। यदि इस नजरिए से देखा जाए तो सवाल उठता है कि क्या बच्चों के होने, शिक्षकों के होने या आधारभूत सुविधाओं के होने मात्र से शिक्षा की गुणवत्ता तय हो जाती है ? शिक्षा में काम करने वाला कोई भी व्यक्ति कहेगा कि, शायद नहीं। अतः यह समझना जरूरी है कि शिक्षा में गुणवत्ता के लिए और वे क्या घटक हैं जिनसे गुणवत्ता निर्धारित होती है ?

शिक्षा विमर्श के अप्रैल-मई, 2003 के अंक में 'अच्छी शिक्षा' नामक लेख में रोहित धनकर शिक्षा की गुणवत्ता के संदर्भ में कहते

हैं कि, '' 'शिक्षा की उत्कृष्टता' 'सीखने की उत्कृष्टता' पर निर्भर करती है। सीखने की उत्कृष्टता में वे रुझान, मूल्य एवं आदतें हैं जो सीखने एवं ज्ञान सृजन में मदद करते हैं। वे क्षमताएं जो आगे अपने आप सीखने में मदद करती हैं तथा (एक अन्य पहलु) अर्जित ज्ञान की मात्रा है।'' लेख में कहा गया है कि, ''शिक्षक-छात्र अनुपात, शिक्षण सामग्री की उपलब्धता, भौतिक संसाधन, सभी बच्चों का विद्यालय आना, पांचवीं पास करना आदि सभी बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा उपलब्ध कराने की आवश्यक शर्तें हैं। पर ये शिक्षा की गुणवत्ता को परिभाषित नहीं करतीं। यह भ्रामक धारणा है और गुणवत्ता शिक्षा की धारणा इन्हीं में उलझकर रह जाती है।''

यहां यह आवश्यक हो जाता है कि 'सीखने की उत्कृष्टता' को समझा जाए कि सीखने की उत्कृष्टता के मायने क्या हैं ? कैसे जाना जाए कि बच्चे का सीखना उत्कृष्टता के साथ हो रहा है ? यदि इसे जानना चाहें तो कुछ इस प्रकार की बुनियादी बातें निकलकर आएंगी कि, शाला में सीखने के नाम पर जो कुछ भी चल रहा है क्या उसका बच्चे के विकास में योगदान है ? क्या वह बच्चे के व्यक्तित्व को नया रूप दे पा रहा है ? क्या बच्चा अपने ज्ञान एवं क्षमताओं पर आत्म-विश्वास महसूस करता है? क्या बच्चा अपने प्रयासों से सीखने-समझने की ओर अग्रसर होता है ? क्या बच्चा अपने विवेकानुसार निर्णय लेने की क्षमता अर्जित करता है ? क्या बच्चा अपने आसपास की घटनाओं की व्याख्या के प्रति वैज्ञानिक-तार्किक नजरिया अपनाता है ? क्या बच्चा अपने परिवेश/समाज से संवेदनशील रिश्ता कायम कर पाता है ? क्या बच्चा अपने आसपास की असंतोषजनक स्थितियों के प्रति अपना मत बनाता और प्रकट करता है ? यहां कहने का आशय यही है कि किसी भी शिक्षा व्यवस्था में शिक्षा की गुणवत्ता तभी निर्धारित होगी जब बच्चे को शाला में वे सभी अवसर मिलें जिनसे कि उसका सीखना सार्थकता हासिल करे। बच्चे का सीखना धूनी रमाने जैसी कोई एकांतिक और व्यक्ति केन्द्रित गतिविधि नहीं है। किसी व्यक्ति के ज्ञान एवं कर्म का सामाजिक संदर्भ होता है। अतः शिक्षा की गुणवत्ता का सामाजिक आयाम भी हैं। शिक्षा को सिर्फ आधारभूत सुविधाओं का पर्याय मान लेना शिक्षा में गुणवत्ता की बहस का पॉपुलर नजरिया है। यह शिक्षाशास्त्रीय नजरिया नहीं है। यह शिक्षा का प्रबंधकीय/प्रशासकीय नजरिया है।

मूल्यांकन गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का एक घटक है और यह अहम रूप से शिक्षा व्यवस्था को प्रभावित करता है। अतः यह देखना समीचीन होगा कि मूल्यांकन एवं गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का क्या संबंध है ? मूल्यांकन के बारे में लगभग भूले बिसराये शिक्षाविद डेविड ऑसब्रो का एक लेख है-'मूल्यांकन का मूल्यांकन' (शिक्षा विमर्श, अगस्त-सितम्बर, 1998)। लेख में कहा गया है कि, ''शाला शिक्षण के स्तर में विगत तीस वर्षों से चल रही सतत गिरावट के कारणों में मूल्यांकन सर्वाधिक शक्तिशाली कारण है। मूल्यांकन अपनी अंक प्रदान करने की प्रक्रिया को अधिकाधिक वस्तुनिष्ठ बनाने की सनक तथा बालकों की कोमल बुद्धि को परम अनावश्यक जानकारी के टुकड़ों से भरने की अनबुझ प्यास के कारण एक भारी भरकम 'घनचक्कर की पहेली योजना' बनकर रह गया है। परीक्षा केवल छात्र की स्मरण शक्ति की ही जांच करती हैं, न कि उसकी शैक्षणिक उपलब्धियों की और सृजनात्मकता की।'' वे कहते हैं कि, ''मूल्यांकन व्यवस्था ने हमारी शिक्षा व्यवस्था को बर्बाद कर दिया है और इसका असर पाठ्यक्रम, पाठ्यपुस्तकों, विषयवस्तु एवं शिक्षण विधियों पर पड़ा है। परिणामतः शैक्षिणिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण व आनंदप्रद उन सभी विषयों को पाठ्यक्रम से निकाल दिया जाता है जो कि मूल्यांकन के उनके दायरे में आसानी से नहीं आतीं जैसे कि कला, हस्तशिल्प, संगीत, विचार विमर्श, सर्जनात्मक काम, साहित्य आदि।''

मूल्यांकन का तरीका दोहरी तलवार की तरह है। यदि इसे बेहतर रूप में इस्तेमाल किया जाए तो यह शिक्षा की गुणवत्ता को अर्जित करने में मदद कर सकता है और यदि इसे सिर्फ और सिर्फ परीक्षाओं से बांधकर ही देखा जाए तो इसके उल्टे नतीजे भी हो सकते हैं। इससे रटन्त प्रणाली को भी स्थापित किया जा सकता है। हरियाणा की सेमेस्टर प्रणाली के जिस अनुभव को राजस्थान में काम लेने की बात की जा रही है वहां पर परीक्षा परिणाम बढ़ाने की होड़ में परीक्षाओं में अब सिर्फ वस्तुनिष्ठ सवाल ही पूछे जाते हैं। बच्चों के पढ़कर समझने, सोच-समझकर एवं अपनी कल्पनाशीलता से जवाब देने के अवसर नहीं हैं। निश्चित तौर पर हरियाणा में इससे परीक्षा परिणामों का प्रतिशत बढ़ा है लेकिन इसने बच्चों पर रटने का बोझ भी बढ़ाया है। यदि मूल्यांकन में सुधार करना है तो उन सभी पहलुओं को समायोजित करना होगा जिन्हें शिक्षा के उद्देश्य समाहित करते हैं। यह शिक्षा के उद्देश्यों से स्वतंत्र और अलग-थलग चलने वाला कार्य व्यापार नहीं है।

अंत में, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए यह आवश्यक है कि शाला का माहौल जीवंत बने। बच्चों को सीखने के अवसर हों। वे अपने अनुभवों को संजो सकें। उन्हें सीखने का आनन्द मिले। उन्हें ऐसी विधियों से सिखाया जाए जिससे कि सीखना सहजरूप से एवं स्थायी हो। गुणवत्ता के इस विमर्श में यदि इन मुद्दों पर भी ध्यान दिया जाएगा तो शायद हम ज्यादा बेहतरी के साथ गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के कार्य को अंजाम दे पाएंगे और बेहतर मुकाम पर पहुंच पाएंगे और गुणवत्ता का सवाल भी ज्यादा गुणवत्ता के साथ उठाया जा सकेगा। ◆